Golden Research Thoughts
Vol -1 , ISSUE –3, September 2011
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में व्यवस्था विरोधी चेतना

सुनीता

पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.

प्रस्तावना :-

नरेन्द्र मोहन ने अपने कई आलेखों में आधुनिकता सम्बन्धी अवधारणा का स्पष्ट उल्लेख किया है । उनके विचार में आधुनिकता मध्यकालीन विचारों और मूल्यों को नकारती है और मूल्य निरपेक्ष भी नहीं होती नकार अर्थात् अस्वीकार का एक सन्दर्भ व्यवस्था के विरोध से भी सम्बन्धित है । नरेन्द्र मोहन जानते है कि आधुनिकता एक प्रश्नाकुल मानसिकता है जो हर बँधी-बँधायी व्यवस्था या मार्यादा या धारणा को तोडती है । इस आधुनिकता बोध का विद्रोही रुपनरेन्द्र मोहन के नाटकों मे (व्यवस्था विरेाध) बनकर उभरता है।

1. व्यवस्था विरोध की अवधारण:-

प्राय: समीक्षा में व्यवस्था और व्यवस्था विरोध को बहुत अस्पष्ट और लचीले अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है । कुछ आलोचक किसी संस्थान विशेष को व्यवस्था मान लेते है । कभी इसे पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक माना जाता है । आज के दौर में व्यवस्था वर्तमान जनतान्त्रिक व्यवस्था का पर्यायवाची भी है । डॉ. वेदप्रकाश अभिताभ के शब्दों में- च्वस्तुत: व्यवस्था एक व्यापक शब्द है, जिसमें केवल राजीतिक या आर्थिक पक्ष प्रमुख न होकर सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भी पर्याप्त महत्वपूर्ण होते है । अत: व्यवस्था केवल सत्ता के चरित्र या आर्थिक नीति तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना राजनीतिक सोच और अर्थतत्र को स्वयं में समाहित किये हुए है । भारतीय परिवेश में देखे तो कार्यपालिका न्यायपालिका,अमलातन्त्र, प्रेस,सामाजिक मूल्यों का संक्रमण सांस्कृतिक चेतना अर्थात् पूरा परिदृश्य (व्यवस्था) को द्योतित और व्याख्यायित करता है । चूँकि राजनीतिक सत्ता जीवन के अन्य क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डालती है, अत: व्यवस्था-विरोध के अन्तर्गत सत्ता-विरोध की भावना का मुखर होना स्वाभाविक है ।[2]

व्यवस्था विरोध के सन्दर्भ में स्वयं नरेन्द्र मोहन का विचार है कि जिस व्यवस्था का विरोध किया जाय उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए और उसके विरोध का कोई ठोस वैचारिक आधार भी होना चाहिए इसके साथ भी वे किसी पार्टी या विचार धारा विशेय से इस विरोध को जोडना उचित नहीं समझते । एक स्थान पर उन्होंने यह लिखा है- "लेखक का व्यवस्था के विरुध्द होना ठीक वैसा नही है जैसा किसी राजनीतिक दल के नेता या कार्यकर्ता का व्यवस्था विरोध रुख/लेखक का रुख उसकी रचनात्मक मानसिकता में से छन कर आता है । और उसकी मूल्यगत आस्था को सूचित करता है । इसलिए तंत्र की टकराहट की अभिव्यक्ति में वीर युध्दाओ के बजाय यातना का अहसास रहता है ।'[3]

उपर्युक्त सभी मन्तव्यों को समाहित करते हुए कहा जा सकता है कि व्यवस्था-विरोध में हर तरह की व्यवस्था चाह वह सामन्ती है, चाह वह पूँजीवादी हो या जानतान्त्रिक व्यवस्था हो,निशाने पर होती है । हर व्यवस्था की

असंगतियों पर प्रहार करना लेखक का दायित्व होता है । नरेन्द्र मोहन के नाटकों में समान्तवादी पृष्ठभूमि से लेकर आजतक की जनतान्त्रिक स्थितियाँ विद्यमान है । अत: उनके नाटक सभी प्रकार की व्यवस्थाओं की कुरुपताओं से टकरातें दिखायी देते है । उनकी व्यवस्था विरोध की अवधारणा में केवल विद्रोह या विरोधमात्र नहीं है । बल्कि सबके लिए हिताकारी व्यवस्था की स्थापना का संकल्प भी उसमें है ।

2. सामन्तवादी व्यवस्था के अर्न्तविरोध:-

नरेन्द्र मोहन के नाटकों की पृष्ठभूमि में मुख्यत: सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्विरोध और विसंगतियाँ रहे है ।"कहें कबीर ..." 'कलन्दर' ,'अभंगगाथा ' में सामन्तवादी व्यवस्था की असंगतियाँ दृष्टिगोचर होती है । "कहें कबीर ... ..."मैं सिकन्दर लोदी, कलन्दर में बलबन और जलालुद्दीन, अभंगगाथा में राजा के रुप में सामन्तवादी व्यवस्था की सभी बुराईयाँ देखने को मिलती है । ये तीनों नाटक सामन्ती व्यवस्था पर केन्द्रित रहे है ।

नरेन्द्र मोहन के इन राजाओं और सुल्तानो के माध्यम से सामन्ती व्यवस्था का चरित्र नग्न रुप से उपस्थित कर दिया है । सभी राजा और सुल्तान जनविरोधी है । जनता का उत्पीडन करना चाहते है ।

नरेन्द्रमोहन के नाटक "कहें कबीर ... ..."का कबीर एक संघर्ष पुरुष है जिसके पीछे परेशानियों और तकलीफों का एक बीहड है । उस बीहड से निकलकर जब वह बाहर आता है तब वह अपने सामने जातिवाद,साम्प्रदायिकता,शोषण,अत्याचार के देश को अपनी "चमडी पर रेंगते" [4] महसूस करता है । वह सत्य के अनन्तपथ पर सामाजिक न्याय और मानव समानता के लिए निरन्तर लडता है ,मजहवी फिरका परस्त सत्ता और आंतक से लोहा लेने की उनमें हिम्मत है वह कहता है कि "मौत से क्या डरना सुल्तान एक सच के लिए हजार बार कुर्बान हुआ जा सकता है"[5] इतिहास के पर्दे को चीरती हुई यह वाणी सत्य और न्याय की लडाई लडने के लिए आम आदमी को उकसाती है ।

"नो मैस लैण्ड" "कलन्दर" "अभंगगाथा" "कहै कबीर" इन चारों में सत्ता की ओर सत्ता के साथ लोग,उनके निहित स्वार्थ,उनकी चालें,और धूर्तता तथा दूसरी ओर उनका प्रतिरोध करती शक्तियाँ,चाहे वह कबीर के रुप में,चाहे कलन्दर के रुप में,या सुरजीत के या शिव के रुप में । सत्ता हमेशा विरोधियों को कुचलती रही है । कभी क्रुरता,से कभी भ्रष्ट तरीकों को अपनाकर या लोगों को विवश करके भ्रष्ट साधनों के मनवाकर। वैसे दोंनो का चेहरा एक होता है चाहे "सींगधारी" का राजा हो या 'कलन्दर' का खिलजी या जातिवाद से पिसता कबीर या एक ही भूमि के टुकडों पर दम तोडता सामान्य मनुष्य । बात एक है । कहीं न कहीं यह सामान्य आदमी इतना दृढ होता है कि वह किसी भी राजा या सिकन्दर लोदी की परवाह नहीं करता कबीर सिकन्दर लोदी से कहता है कि "ए सुल्तान स्वर्ग और नरक के बीच में कितना बडा अन्तर है,सूरज और चाँद के बीच के अन्तरिक्ष में अनगिनित हाथी और ऊँट समाये हुए है । यह जब आँख की पुतली की नोंक से भी देखे जा सकते है जो कि सुई के नोंक की छेद से भी छोटी है ।"[6] ,एक अन्य स्थान पर कबीर कहता है, "बोधन ठंडे दिल से विचार कसे निर्भय होकर इनकी करतूतों को उभारों ।सत्य और प्रेम के रास्ते पर चलते हुए परिणाम की परवाह किये वगैरह । सिर दे दो,पर उफ न करों ।"[7] अत: कबीर अधिकार विहीन वर्ग का अधिकार युक्त वर्ग से संघर्ष करने वाला प्रतीक बनता है ।

"नो मैस लैण्ड" में सामन्ती व्यवस्था की अमानवीयता पर प्रहार करते हुए वकील कहता है कि "मुझसे मेरी महबूबा छीन ली,तकसीम करने वाली सियासत ने "[8] सिराजुद्दीन और "सकीना प्रसंग में दफेदार दो का यह कथन मानवीय मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लगाता है सकीना के जिस्म मे जुंबिश हुई । उसने बेजान हाथों से इजारबन्द खोल

सलवार नीचे सरका दी"[9] ऐंग्लोइन्डियन की दुश्चिन्ता "मै कहाँ जाऊँगा" मानवीय स्थितियों का उपहास है । इस तरह इस गन्दी राजनैतिक व्यवस्था का आज के परिवेश में ज्वलन्त उदाहरण है । नौ मैंस लैण्ड के पात्र पागल नहीं, बल्की सियासत की बुरी व्यवस्था का परिणाम है जो इन पर तरह-तरह के जुल्म करते है ।

'सीगधारी ' में 'राजा के सिर पर सींग ' की लोककथा को केंन्द्रिय आधार बनाकर भूत से वर्तमान तक की राजनैतिक, धार्मिक,सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियों विद्रूपताओं को उद्घाटित करती है । देश की जनता राजा और नेता के सीगों के बीच जकडी हुई लहूलुहान हो रही है । प्यारेलाल और शिव इन शक्तियों का विरोध करते है इसलिए नेताओं की पोल खेालने के जुर्म में शिव को फॉसी होती है।

'कलन्दर' अपने समय की धार्मिक,राजनैतिक परिस्थितियों से ही अवगत नहीं कराता अपितु समाज की जडों में बिछे,हुए उस भंयकर तन्त्र का भी पर्दाफाश करता है जिस नंगी ऑखों से देखना प्रायः असम्भव हो जाता है। सामाजिक ठेकेदारों, धर्म के अलम्बरदारों से तो कलन्दरों का छत्तीस का आंकडा था ही,राजनीति के भ्रष्ट आचारण व सामन्तों की घोर अत्याचारी व अनाचारी व्यवस्था से भी उनकी कभी नहीं बनी । क्योकि कलन्दर अपने में स्वतन्त्र रुप से विचरने वाला, विद्रोही प्रवृति के न्यायप्रिय और दंबग व्यवहार के थे इसलिए उनमें सामना करने की शक्ति थी । सुल्तान जलालुद्दीन, अबूवक्रतूसी, तुराब के माध्यम से सीदी मौला का कत्ल करवाता है।

'कलन्दर' के माध्यम से उन्होंने तेरहवीं शताब्दी की सामन्तवादी व्यवस्था पर प्रकाश डाला है । उस समय का सुल्तान जलालुद्दीन जनता पर अनेक तरह के आमानवीय अत्याचार धार्मिक कठमुल्लाओं, कर्मचारियों,समाज के ठेकदारों के माध्यम से करवाता था । जनता यदि विरोध करती थी तो सेठ,साहूकार, जमीदार अनेक अमानवीय यातना देते थे ।'कलन्दर' में तुराब कहता है ,"दस साल का था मैं और जमींदार का करिंदा मुझे कोडें से पीटता गया था । जमीदार और मौलवी दूर खडे देखते रहे थे ।कोई इन्सान मुझे बचाने नहीं आया था मैं जमींदार को बर्दाश्त नहीं कर सकता ।मुझे इनसे नफरत है नफरत"[1.] ये तो पीटने तक सीमित है मृत्युदण्ड तक दिया जाता था। राजा अपने को रब समझकर जनता पर हुकूमत करवाता था। ऐसी विषम परिस्थितियों का कलन्दरों ने सामना किया। वलवन हो या जलालुद्दीन सभी इन कलन्दरों की ताकत से भयभीत थे । शोषण और अन्याय की नींव पर खडे उनके साम्राज्य के ये शत्रु थे । कलन्दर अन्याय का विरोध करते थे,सामन्तों के कुचक्रो से आम जनता को मुक्त करने के लिए बगाबत करते थे ।

"नो मैस लैण्ड" में भजन सिंह रामकिशन से कहता है कि बाहट आकर देखो,सियासत की रंगबिरंगी बेढंगी चालें"[11]। आगे प्रत्युत्तर में रामकिशन कहता है कि "चमकती हुई थौडी हरकतें और जगमगाते चेहरे पर खून के धब्बेझ ूठ की खूबसूरत इबारत"[12] ये सब क्या है सामन्तवाद का असली रुप । नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटक "नो मैस लैण्ड" में राजनैतिक सत्ता की क्रुर साजिसों और अंधेर गर्दियों को,दमतोड रहे, असन्तुलित और असमान्य सी जिन्दगी रहे आम लोगों की मनोदशाओं और व्यवहार को बडी गहराई से और सक्ष्मता से उघाडा है ये राजनीति की क्रुर साजिश इतिहास के बीहड जंगल से होती हुई वर्तमान में भी अपनी जडें जमाये हुए है । बकील कहता है कि "सियासत आदमी के सपने छीनती है "[13] देश की जनता अपने शासक पर चाहे वह राजा हो या नेता अपनी सुविधाओं के लिए, अपनी जीविका के लिए निर्भर रहती है इनसे अपने लिए सुविधाओं की अपेक्षा करती है । जनता इनको भगवान से भी बढकर विश्वास करती है किन्तु यही लोग उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरते ।

सामन्तवाद अपने में एक शोषित और शोषक की दास्तान है जिसे लेखक ने अपने नाटकों के माध्यम से आज के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है । शोषित व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए हर युग में सता से टकराता रहा है । चाहे उसे कैसी भी सजा मिले। वह कबीर हो या सीदी मौला,शिव हो या तुकाराम । कलन्दरों के प्रतिक्रिया वादी आक्रोश को

तुराव के व्दारा कहलवाया गया है जमींदार का कारिंदा दस साल के लडके को मार रहा था। "जमींदार गालियाँ बक रहा था"[14] तुराब का यह चरित्र हिसंक विद्रोही के रुप में उभरता है जो समाज के प्रति संघर्ष का सूचक है । वर्तमान युगीन सामन्ती,पूँजीवादी,साम्राज्य वादी सत्ताधारी ताकतों के खिलाफ लडने वाला व्यक्ति जनवादी सिध्दान्तों का पोषक है । 'सींगधारी 'में हीरा और भजनसिंह के बीच 'जमींदार' अखबार की खींचातानी में जमींदार और साहूकार के प्रतिविद्रोह और संघर्ष है 'कहे कबीर ... ... 'में केवल अस्पृश्य होने के कारण हो रहे अत्याचार और उत्पीडन को उभारा है ।

सामन्ती व्यवस्था में और जनतान्त्रिक व्यवस्था में भी सत्ता के तानाशाह शब्द सत्य से ही डरते है । इस बात को अभंगगाथा के प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में देखा जा सकता है , सदाशिव,बालाजी और दामोदर अंधेरे में बैठी कीर्तन मंडली की उभ्रती हुई आवाज, 'शब्द ही शस्त्र अंधेरे को चीरता' को ललकार कर कहते है 'शब्द का भरम फैलाता कौन है,"किसकी मौत की भय के सामने गाता भरोसे के शब्द"[15] सदाशिव धर्म पंडित ब्राम्हण, तानाजी,क्षत्रिय और दामोदर व्यापारी के हथियार है जो आम आदमी को धर्म,सत्ता तथा सम्पति की ताकत के बल पर डराते है , लूटते है और उसका शोषण करते है तुकाराम का संघर्ष इन तीनों सत्ताओं से है ।

3. सम्राज्यवादी पूँजीवादी व्यवस्था के अवमूल्य:-

ऐसी राजनैतिक, आर्थिक व्यवस्था जो निजी सम्पत्ति एवं निजीलाभ की अवधारणा को मान्यता देती है और सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार और आर्थिक गतिविधियों में सहकारी हस्तक्षेप का विरोध करती है पूँजीवादी व्यवस्था कहलाती है । पूँजीवादी व्यवस्था में दो वर्ग होते है पहला धनी वर्ग जो सम्पूर्ण समाज पर शासन करता है नेता लोग भी उसी के इशारे पर चलते है क्योकि चूनावों मे जीतने के लिए ये लोग शासन को धन प्रदान करते है दूसरा वर्ग वो है जो इनके शासन में रहता है गरीब वर्ग अर्थात् मजदूर वर्ग , जिसे पूँजीपति अपना गुलाम बनाकर रखते है । पूँजा के बल पर समाज के प्रभावशाली व्यक्ति इनके इशारे पर कार्य करते है यदि ये लोग जुर्म के खिलाफ आवाज उठाते है तो उन्हें बल प्रयेाग के व्दारा दबा दिया जाता है स्वतन्त्रता से पहले और बाद में हिन्दी नाटकों में इस विषय पर अधिक मात्रा में प्रकाश डाला गया । नरेन्द्र मोहन ने भी अपने नाटक 'सींगधारी के माध्यम से इस पूँजीवादी व्यवस्था का वर्णन किया है । 'सींगधारी में शिव भी "गुण्डों का राज" देखकर स्तब्ध है और यह "वक्त के टुकडों को जबडों में दबोचे बदहवास जीने के लिए वाध्य है,"[16] इन नाटकों में उभरे असंन्तोष के पीछे बैषम्य बढाने वाले आर्थिक सम्बन्ध है और उनसे जुडा शोषण और उत्पीडन है कबीर ने अपनी माँ से प्रश्न पूछा है । वह आज का ज्वलन्त प्रश्न है- "मेहनत करते है तो भी दु:खी कौन छीन लेता है उनसे मेहनत के फल ।"[17] यदि कोई शिकायत या प्रतिवाद करता है तो उसे प्रशासन से कोई सुरक्षा मिलने के बजाय दुत्कार मिलती है उत्पादन के साधन पर इनका कब्जा है मोटा मुनाफा कमाकर थोडा सा घ्सत्ताङ को भेंट देकर इनकी विलासिता पूर्ण जिन्दगी का रथ दौडता है। 'सींगधारी ' में जसबन्त,सतनाम,तरसम जैसे उद्योगपति और धनिक नेता के साथ है और हर तरह की अनीति को प्रश्रय देते है नाटककार जमींदार, उद्योगपति और राजनीतिज्ञ के गठबन्धन से आम आदमी की मुश्किल और मुसीबत का बयान करता है और आर्थिक सन्दर्भे में शेर-बकरी या शोषक-शोषित जैसे सम्बन्धों का कायल है पूँजीवादी तत्वों का विरोध करते समय मध्यवर्ग प्राय: जोखिम उठाने से डरता है । पूँजीवादी व्यवस्था में धनीवर्ग उद्योगपति शासकों से मिलकर जनता का खूब शोषण करते है "नौ मैस लैण्ड" में विसन सिंह को दिखने वाले भेडिये कुत्ते इन्ही शोषक व्यक्तियों के प्रतीक है । सीगधारी में इन तत्वों को एक कविता के माध्यम से पहचाना गया है ये तत्व अपने हिस्से के वोटों का हिसाब रखते है और लाशों केा वोटों में और वोटों को लाशों में बदलते समय उन्हें तनिक संकोच नहीं होता ।

नाटककार के अनुसार सत्ता को उसकी एजेन्सियों के,व्दारा केवल बाहरी दमन और उत्पीडन ही नहीं किया गया है,उन्हेांने जनसाधारण को असहाय,संवेदनशून्य और अकेला बना देने में कोई कसर नहीं छोडी है "नौ मैस लैण्ड" रामकिशन ने इस कुट सत्य को विस्तार से कहा है कि राज्य पर अधिपत्य जमाने में ये स्वार्थी तत्व सत्य,न्याय आदि का निर्णय अपने नजरिये से करते है-"हुकमराम तेा चाहते है कि तुम लोग मानते रहो जोहै, वोहै ।वो तुम्हारी कल्पना की शक्ति ही कुन्द कर देना चाहते है । इस शक्ति को सत्य कर देने पर उनके लिए कितना आसान हो जाता है फूट डालना और राज्य करना,नफरत के बीज बोना और फसाद कराना तवारीक को हमारे सिर पर हथौडे की तरह मारना,जुगराफिया को जख्मी करना और वतन को विरासत से काटना ।"[18] नरेन्द्र मोहन ने "अभंगगाथा" में सन्त तुकाराम के माध्यम से उस धनिक व्यवसाय की करतूतों को नंगा किया है जब रामेश्वर भट्ट तुकाराम को नीचा दिखाने के लिए वहस करता है तो तुकाराम कहता है-जानता हूँ.एक तरफ सुल्तान,अमीर उमरा तक तुम्हारी पहुँच है, दूसरी तरफ धनिकवर्ग तक उनका गुणगान करके तुम उससे लाभ प्रतिष्ठा पाते हो,बदले में अपनी विद्या और बुध्दि को उनके चरणों में चढा दते हो यह विद्या और बुध्दि को उनके चरणों में चढा दते हो यह विद्या और बुध्दि का व्यापार है । ऐसे विव्दान और वैश्या में क्या अन्तर है ? आज एक भी एसा विव्दान,पंडित और बुध्दिजीवी नहीं दिखता जो बेधडक होकर सच की भाषा बोल सके ।"[19]

'सींगधारी ' नाटक आज की राजनीति का खुलासा करता है आज के नेताओं के चरित्रकों उघाडने का कार्य करता है आज के नेता भी 'सींगधारी ' है वे अपने सींग से उन सबका सफाया करते चलते है जो उनका जरा सा भी विरोध करने की जर्रत करते है ।प्रजातन्त्र का इससे बडा मखौल क्या होगा कि लोगों को अपनी बात तक कहने की आजादी नहीं है । अपना जीवन स्वतन्त्रता से जीने की छूट किसी को नहीं है सबको किसी का आदमी बनकर रहना होगा प्यारेलाल की चिंता इस दिशा में कितनी जायज है-कोई किसी का आदमी है तो "कोई किसी का,मै किसका आदमी हूँ? इतना काफी नहीं कि आदमी हूँ ।"[20.]

आदमी सिर्फ आदमी बनकर नहीं रह सकता आजादी के इतने साल बाद भी नहीं । राजतन्त्र में भी यही स्थिति थी लोकतन्त्र में भी यही है । शायद यही दिखाने के लिए नरेन्द्र मोहन ने एक लोककथा का सहारा इस नाटक में लिया है । उस जमाने में राजा के सिर पर 'सींग ' हुआ करते थे, इस जमाने में नेता के सिर पर । नेता ही क्यों-अफसर, सेठ, साहूकार,कोतवाल,पटवारी,हवलदार सभी सींगधारी है जो जनता को अपने सींगो से लहूलुहान कर रहे है । नेतागण 'लाशों को वोटों में और वोटों को लाशों में 'बदलने का खेल खेल रहे है और लोग खामोश है । यह खामोशी वास्तव में-'एक बुजदिल की आड है-जोखिम से बचने के लिए' जो खामोशी तोडता है उसे सजा भुगतनी पडती है । राजा के सिर पर सींग होने की जानकारी नाई और बाँसुरी वादक ने लोंगों को दी थी, दोनों का कत्ल कर दिया गया था । नेता के सिर पर सींग की जानकारी पत्रकार शिव देना चाहता है तेा उसे देशद्रोही के जुर्म में फाँसी की सजा होती है जो लोग इस व्यवस्था के हिस्से है अर्थात् किसी के आदमी है सिर्फ उनकी ही चांदी है ।

'सींगधारी' नाटक शोषक और शोषित की दास्तान नहीं है ''नौ मैस लैण्ड" में विभाजन की त्रासदी ने राजनैतिक कानून की अनिवार्यता को स्पष्ट किया है । विशनसिंह एक पेड से लिपटकर उसे छोडने को तैयार नहीं है दफेदार कहता है कि "बडा आया पेड का मालिक । टहनियाँ और पत्तियाँ सब राज्य ने काट लीं तो क्या कर लिया तूने ?"[21] लाहौर और अपना पिंड ढूँढने वाले ये पात्र उन सब लोगों की त्रासदी और पीडा के प्रतिनिधि है, जिन्होंने इसे भोगा है तभी तो ---------- "सियासत आदमी से उसके सपने छीनती है ।"[22]

पूँजीवादी व्यवस्था में एक बीच का वर्ग है जिसे मध्यवर्ग कहते है । बुध्दि जीवी वर्ग । यह सुविधाजीवी है यह व्यवस्था के विरोध में यदि आवाज उठाता है तो इसे पूँजीवर्ग खरीद लेता है असीमित सुविधाऐं देता है जिसका भोग

करके ये जुर्म के खिलाफ आवाज उठा नहीं पाते सींगधारी में व्यक्ति इसी का प्रतीक है । सत्ता हमेशा अपने विरोधियों को कुचलती है कभी क्रुरता से तो कभी भ्रष्ट साधनों को अपना कर या लेांगों को उक्त साधनों को अपनाने के लिए विवश करके वैसे दोनों का चेहरा एक है देश अलग-सीदी मौला असत्य,अन्याय के विरुध्द आवाज उठाता है इसी कारण सुल्तान के लिए चुनौती बन जाता है सुल्तान जलालुद्दीन सीदीमौला को आग के हवाले करवा देता है । इसी तरह सींगधारी में सच बोलने की सजा नाई को मिलती है,शिव को मिलती है ।

पूँजीवाद कुटिल राजनीति को पुष्ट करता है और पूँजीवाद आम आदमी की बुध्दि, क्षमताओं को खरीदता है,किन्तु इसके विरोध का मतलव है गोली का निशाना बनना । एक प्रकार से भयावह वातावरण गोलीबारी का आतंक,हत्याऐं,हिंसा,लूटखसोट में सब विध्वंसक प्रवृत्तियाँ है जो विभिन्न वर्गीय चरित्रों के खाकों में रंग भरती है पत्रकार चुनावी राजनीति,साहूकारों,मिल मालिकों और कारीगरों के साथ सांठ-गांठ की अन्दरुनी कहानी को अच्छी तरह पहचानता है । खुलेआम नेता को धूर्त और मक्कार कहता है किन्तु नेता हँसता है आम आदमी सुखद भविष्य के सपने देखते-देखते अपनी पूँजी गंवा बैठता है इसी तरह कहें कबीर-------- में गायक गायिका के माध्यम से लेखकने आम आदमी के अन्तर्व्दन्दों,शंकाओं,दुविधाओं एवं दुबर्लताओं को प्रस्तुत करता है । गायक गायिका आपस में कहते है "तुम पर जुल्म हुए और महसूस भी किये,पर कभी उठे नहीं,उठ कर तने नहीं,तन कर एक जुट नहीं हुए ।"[23] इन सबके पीछे कबीर का व्यक्तित्व है यह व्यक्तित्व वर्तमान शासक और सत्ताधारी कर्म की हुकूमत के तानाशाही रुप को मध्यकालीन वातावरण से जोडता है केवल जोडता नहीं है । प्रतिवाद,संघर्ष की दिशाओं को व्यंजित भी करता है ।

"मिस्टर जिन्ना" भी बहुत कुछ पूँजीवादी और राजनीतिकरण से जुडा है । सत्ता पर धर्म मजहव से ऊपर उठकर सत्ता को अपनी मुट्ठी में लेकर राजनीतिज्ञ शासन करना चाहते है । जनहित से उनका कोई मतलब नहीं है । जिन्ना माइनोरिटी "मुस्लिम" को सभी सुविधायें,हक दिलवाना चाहता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नरेन्द्र मोहन: सृजन और संवाद-सं.डॉ.वीरेन्द्र सिंह,अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली-110030 प्र. संस्करण
2. साथ-साथ मेरा साया - नरेन्द्र मोहन,किताब घर प्रकाशन 24,अंसारी रोड,दरियागंज,,नई दिल्ली -110002
3. हिन्दी नाटक के सौ वर्ष-सं.डॉ.वालेन्द्र शेखर तिवारी,डॉ. बादाम सिंह रावत,गिरिधर प्रकाशन,पिलाजीगंज महेसाना, प्र.सं.-1990

सुनीता
पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.